कुल पृष्ठ संख्या 28 (कवर पेज सहित)

क्रम संख्या 0000423

# माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान अजमेर

वरिष्ठ उपाध्या 600038

U-70026

(परीक्षार्थी द्वारा स्वयं भरा जाना चाहिए)

नोट ... किसी भी भाग में अपना नामांक नहीं लिखें।

माध्यम – हिन्दी ☐ अंग्रेजी ☐

विषय व्याकरणशास्त्रं

परीक्षा का दिन शुक्रवार

दिनांक 27-02-2026

**प्रश्नवार प्राप्तांकों की सारणी (परीक्षक के उपयोग हेतु)**

| प्रश्नों की क्रम संख्या | प्राप्तांक | प्रश्नों की क्रम संख्या | प्राप्तांक |
|---|---|---|---|
| 1 | 18 | 19 | 4 |
| 2 | 6 | 20 | 4 |
| 3 | 12 | 21 | |
| 4 | 2 | 22 | |
| 5 | 2 | 23 | |
| 6 | 2 | 24 | |
| 7 | 2 | 25 | |
| 8 | 2 | 26 | |
| 9 | 2 | 27 | |
| 10 | 2 | 28 | |
| 11 | 2 | 29 | |
| 12 | 2 | 30 | |
| 13 | 2 | 31 | |
| 14 | 3 | योग | 80 |
| 15 | 3 | प्राप्तांकों का कुल योग (Round off) | |
| 16 | 3 | अंकों में | शब्दों में |
| 17 | 3 | 80 | अस्सी |
| 18 | 4 | | |

परीक्षक के हस्ताक्षर [signature]

संकेतांक 4 0 1 1 0

नोट :– परीक्षार्थी के लिए आवश्यक निर्देश इस पृष्ठ के पिछले भाग पर उल्लेखित हैं। जिन्हें सावधानी पूर्वक पढ़ लें व पालन अवश्य करें।

परीक्षक हेतु निर्देश :– (1) परीक्षक को उपरोक्त सारणी अनुसार प्राप्तांक भरना अनिवार्य है, अन्यथा नियमानुसार दंडित किया जायेगा।

(2) परीक्षक उत्तर पुस्तिका के अन्दर के पृष्ठों के बायीं ओर निर्धारित कॉलम में लाल इंक से अंक प्रदत्त करें।

(3) कुल योग भिन्न में प्राप्त होने पर उसे पूर्णांक में ही परिवर्तित कर अंकित करें (उदाहरणार्थ: 15 ¼ को 16, 17 ½ को 18, 19 ¾ को 20)

प्रमाणित किया जाता है कि इस उत्तर पुस्तिका के निर्माण में 60 जी.एस.एम. ईको मैपलिथो कागज़ ही उपयोग में लिया गया है। 181 / 2026

# परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक निर्देश

1. समस्त प्रश्नों का हल निर्धारित शब्द सीमा में इसी उत्तर पुस्तिका में करना है। विशेष परिस्थिति में अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका, उत्तर पुस्तिका भरी हुई होने पर पर्यवेक्षक एवं वीक्षक की अनुशंसा पर ही उपलब्ध कराई जायेगी।
2. प्रश्न–पत्र पर निर्धारित स्थान पर ही अपना नामांक लिखें।
3. प्रश्न–पत्र हल करने के पश्चात् जिस पृष्ठ पर हल समाप्त होता है, उस पर अन्त में "समाप्त" लिखकर अन्त के सभी रिक्त पृष्ठों को तिरछी लाईन से काटें।
4. निम्न बातों का विशेष ध्यान रखें अन्यथा अनुचित साधनों की रोकथाम अधिनियम के तहत कार्यवाही की जा सकेगीः–

   (i) उत्तर पुस्तिका के ऊपर/अन्दर तथा प्रश्नोत्तर के किसी भी भाग में चाही गई सूचना के अलावा अपना नामांक, नाम, पता, फोन नम्बर अथवा पहचान की कोई अन्य प्रकार की सूचना आदि अंकित नहीं करें अन्यथा "अनुचित साधनों के प्रयोग" के अन्तर्गत कार्यवाही की जावेगी।

   (ii) उत्तर पुस्तिका के पृष्ठों को फाड़ें नहीं। उत्तर पुस्तिका के मुख पृष्ठ पर अंकित संख्या के अनुसार पृष्ठ पूरे होने चाहिए। परीक्षार्थी उत्तर पुस्तिका प्राप्त करते ही पृष्ठ संख्या जांच कर लें यदि पृष्ठ कम/अधिक या क्रम में नहीं हैं तो वीक्षक से तुरन्त बदलवा लें।

   (iii) परीक्षा केन्द्रों पर पुस्तक, लेख, कागज, केल्क्यूलेटर, मोबाईल, पेजर आदि किसी भी प्रकार का इलेक्ट्रॉनिक उपकरण तथा किसी भी प्रकार का हथियार आदि ले जाना निषेध है।

   (iv) वस्त्र, स्केल, ज्योमेट्री बॉक्स पर कुछ न लिख कर लावें। टेबल के आस–पास कोई अनुचित सामग्री नहीं होनी चाहिए, इसकी जांच कर लें।

   (v) अपनी उत्तर पुस्तिका/ग्राफ/मानचित्र आदि परीक्षा भवन से बाहर ले जाना दण्डनीय अपराध है, अतः परीक्षा समाप्ति पर उत्तर पुस्तिका वीक्षक को बिना सौंपे परीक्षा कक्ष नहीं छोड़ें।

5. उत्तरों को क्रमानुसार एक ही स्थान पर लिखें। प्रश्न क्रमांक भी सही अंकित करें, अन्यथा दण्ड स्वरूप परीक्षक को 1 अंक कम करने का अधिकार है। बीच में उत्तर पुस्तिका के पृष्ठ रिक्त न छोड़ें। गणित विषय के लिए रफ कार्य उत्तर पुस्तिका के अंतिम पृष्ठों पर करें तथा तिरछी रेखा से काटें।
6. जहाँ तक हो सके प्रश्न के सभी भाग के उत्तर, उत्तर पुस्तिका में एक ही स्थान पर अंकित करें।
7. भाषा विषयों को छोड़कर शेष सभी विषयों के प्रश्न–पत्र हिन्दी–अंग्रेजी दोनों भाषा में मुद्रित हैं। किसी भी प्रकार की त्रुटि/अन्तर/विरोधभास होने पर हिन्दी भाषा के प्रश्न को ही सही माना जाये।

| परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर |
|---|---|---|

'खण्ड-अ'

[1] [i] (ब) दिव औत ।

[ii] (द) विधि (निषेध) सूत्रम् ।

[iii] (अ) द्रुहेः ।

[iv] (स) मघोने ।

[v] (अ) अव्ययीभावश्च ।

[vi] (द) पचन्ती ।

[vii] (स) दश्च ।

[viii] (अ) "तदोः सः सावनन्त्ययोः" इत्यनेन ।

[ix] (ब) टाप् ।

BSER-181/2026

| परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर |
|---|---|---|
| 1 | [x] | (अ) अकथितं च । |
| 1 | [xi] | (द) कर्मसंज्ञम । |
| 1 | [xii] | (ब) प्रातिपदिकार्थलिङ्गपरिमाणवचनमात्रे प्रथमा । |
| 1 | [xiii] | (अ) निमित्तात् कर्मयोगे । |
| 1 | [xiv] | (स) पुल्लिङ्गे । |
| 1 | [xv] | (ब) स्त्रीलिङ्गे । |
| 1 | [xvi] | (अ) स्त्रीलिङ्गे |
| 1 | [xvii] | (ब) बुद्धिः । |
| 1 | [xviii] | (द) यज्ञः । |
| 18 | | |

BSER-181/2026

| परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर |
|---|---|---|

[2] (i) उगिदचां सर्वनामस्थानेऽधातोः ।

(ii) उपानह् शब्दस्य द्वितीया-एकवचने उपानहम् रूपं भवति ।

[iii] वार् शब्दस्य प्रथमा-एकवचने वाः रूपं भवति ।

[iv] अन उपधालोपिनोऽन्यतरस्याम् ।

[v] प्रकृत्यादिगणपठितेभ्यः शब्देभ्यः तृतीया विभक्तिः भवति ।

[vi] श्रोणि-योनि-ऊर्मि इत्येते धातुशब्दाः पुंल्लिङ्गे स्त्रीलिङ्गे च प्रयुक्ताः

---

[3] (i) 'प्रहण्यात्' इत्यत्र "हन्तेः" इति सूत्रेण नस्य णत्वं भवति ।

(ii) 'पथिन्' शब्दे इकारस्य स्थाने अकारः "इतोऽत् सर्वनामस्थाने" इति सूत्रेण भवति ।

[iii] 'स्रक्षु' शब्दे चर्त्वं 'खरि च' इति सूत्रेण भवति ।

| परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर |
|---|---|---|
| 1 | | [iv] इदम् शब्दस्य प्रथमा बहुवचने स्त्रीलिङ्गे - 'इमाः' रूपमस्ति। |
| 1 | | [v] "गवाक्षु" इत्यत्र जश्त्वं 'झलां जशोऽन्ते" इति सूत्रेण भवति। |
| 1 | | [vi] "कर्त्री" इत्यत्र ङीप्प्रत्ययः "ऋन्नेभ्यो ङीप्" इति सूत्रेण भवति। |
| 1 | | [vii] 'मनाक्' इति अव्ययशब्दस्य अर्थः - 'किञ्चित्' । |
| 1 | | [viii] 'रात्रौ' इत्यत्र अव्ययसंज्ञा "स्वरादिनिपातमव्ययम्" इति सूत्रेण भवति । |
| 1 | | [ix] "पयसा ओदनं भुङ्क्ते" इत्यत्र कर्मसञ्ज्ञा "कर्तुरीप्सिततमं कर्म" इति सूत्रेण भवति । |
| 1 | | [x] "रामेण बाणेन हतो बाली" इत्यत्र करणसंज्ञा "साधकतमं करणं" इति सूत्रेण भवति । |
| 1 | | [xi] 'सरित्' इति शब्दस्य प्रयोगः "स्त्रीलिङ्गे" भवति । |
| 1 | | [xii] घञ् प्रत्ययान्ताः अप्प्रत्ययान्तश्च शब्दाः "पुल्लिङ्गे" प्रयुक्ताः भवन्ति। |
| 12 | | |

BSER-181/2026

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

खण्ड - 'ब'

2

[4] अम् सम्बुद्धौ

अर्थः → सम्बोधने एकवचने परे अनडुह् शब्दस्य अमागमो भवति

उदाहरणं → हे अनड्वन् ।

[5] राजभिः → "कृत्तद्धितसमासाश्च" इति सूत्रेण राजन्-राजन्-राजन् शब्दानां प्रातिपदिकसञ्ज्ञायां

"सरूपाणामेकशेष एकविभक्तौ" इति सूत्रेण सम राजन् शब्दानां एक राजन् शब्दं शेष्यते

इत्यवस्थायां "स्वौजसमौट्छष्टाभ्याम्भिस्ङेभ्याम्भ्यस्ङसिभ्याम्भ्यस्ङसोसाम्ङ्योस्सुप्", "प्रत्ययः", "परश्च" इति सूत्रेभ्यः तृतीया बहुवचन भिस् प्रत्ययानुबन्धलोपे

2

राजन् + भिस् इत्यवस्थायां "स्वादिष्वसर्वनामस्थाने" इति सूत्रेण 'राजन्' शब्दस्य पदसञ्ज्ञायां

"नलोपः प्रातिपदिकान्तस्य" इति सूत्रेण 'राजन्' इत्यस्य नकारस्य लोपे कृते

राजभिस् "ससजुषोः रुः" इति सूत्रेण सस्य रुत्वेऽनुबन्धलोपे

"विरामोऽवसानम्" इति सूत्रेण 'रु' इत्यस्य अवसान-सञ्ज्ञायां

राजभि + र् "खरवसानयोर्विसर्जनीयः" इति सूत्रेण रकारस्य स्थाने विसर्गादेशे

राजभिः

"इति रूपं सिद्धं"

BSER-181/2026

| परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर |
|---|---|---|

[6] उष्णिग् → ~~"कृत्तद्धितसमासाश्च" इति सूत्रेण उष्णि~~

उष्णिह् शब्दात् "ऋत्विग्दधृक्स्रग्दिगुष्णिगञ्चुयुजिक्रुञ्चां च" इति सूत्रेण क्विन् प्रत्यये

इत्यवस्थायां "हलन्त्यम्" इति सूत्रेण क्विन् इत्यस्य नस्य इत्सञ्ज्ञा

"लशक्वतद्धिते" इति सूत्रेण क्विन् इत्यस्य ककारस्य इत्सञ्ज्ञा

"उपदेशेऽजनुनासिक इत्" इति सूत्रेण क्विन् इत्यस्य इकारस्य इत्सञ्ज्ञा

"तस्य लोपः" इति सूत्रेण इत्सञ्ज्ञक नकारस्य ककारस्य इकारस्य च लोपे कृते

"अपृक्त एकाल्प्रत्ययः" इति सूत्रेण क्विन् इत्यस्य वकारस्य अपृक्तसञ्ज्ञायां

"वेरपृक्तस्य" इति सूत्रेण अपृक्तसञ्ज्ञकस्य वकारस्य लोपे कृते

"कृत्तद्धितसमासाश्च" इति सूत्रेण उष्णिह् शब्दस्य प्रातिपदिकसञ्ज्ञायां

"स्वौजसमौट् ---- सुप्", "प्रत्ययः", "परश्च" इति सूत्रेभ्यः प्रथमैकवचन सु प्रत्ययानुबन्धलोपे

उष्णिह् +स "हल्ङ्याब्भ्योदीर्घात्सुतिस्यपृक्तं हल्" इति सूत्रेण सकारस्य लोपे कृते

उष्णिह् "सुप्तिङन्तं पदम्" इति सूत्रेण उष्णिह् शब्दस्य पदसञ्ज्ञा

"क्विन्प्रत्ययस्य कुः" इति सूत्रेण उष्णिह् इत्यस्य हकारस्य कुत्व घकारादेशे

उष्णिघ् "झलां जशोऽन्ते" इति सूत्रेण घकारस्य जशत्वे गकारे

उष्णिग्

"इति रूपं सिद्धं"

| परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर |
|---|---|---|
| 1 | [7] | तृतीया विभक्ति → दिशा , दिग्भ्याम् , दिग्भिः । |
| | | चतुर्थी विभक्ति → दिशे , दिग्भ्याम् , दिग्भ्यः । |
| | [8] | ददति → "कृत्तद्धितसमासाश्च" इति सूत्रेण ददत् शब्दस्य प्रातिपदिकसञ्ज्ञायां |
| | | "स्वौजसमौट्---सुप्", "प्रत्ययः", "परश्च" इति सूत्रेभ्यः प्रथमाबहुवचन जस् प्रत्ययेऽनुबन्धलोपे |
| | | ददत् + अस् "जश्शसोः शि" इति सूत्रेण जस् स्थाने शि आदेश अनुबन्धलोपे |
| 1 | | ददत् + इ ~~"सुडनपुंसकस्य" इति सूत्रेण सर्वनामस्थानसञ्ज्ञायां~~ |
| | | ~~"सुडनपुंसकस्य"~~ ~~शि सर्वनामस्थानम्~~" इति सूत्रेण सर्वनामस्थानसञ्ज्ञायां |
| | | "नपुंसकस्य झलचः" इति सूत्रेण नुमागम प्राप्ते तं प्रबाध्य "उभे अभ्यस्तम्" इति सूत्रेण अभ्यस्तासञ्ज्ञा |
| | | "नाभ्यस्ताच्छतुः" इति सूत्रेण नुमागमस्य निषेधे तामपि प्रबाध्य "वा नपुंसकस्य" इति सूत्रेण विकल्पेन नुमागमेऽनुबन्धलोपे |
| | | ददन् त् + इ "अज्झीनं परेण संयोज्यं" इति सूत्रेण वर्णसम्मेलने |
| | | ददन्ति "वा नपुंसकस्य" इति सूत्रेण नुमागमस्य विकल्पाभावे |
| | | ददति "इति रूपं निष्पन्नम्" |
| | [9] | * सूत्रम् → शप्श्यनोर्नित्यम् |
| | | * पदच्छेदः → शप्श्यनोः नित्यम् (द्विपदात्मकं सूत्रम्) |
| | | * अनुवृत्ति → "आच्छीनद्योर्नुम्" इति सूत्रस्य नुमागमस्य अनुवृत्तिरायाति |
| | | * सूत्रार्थः → शप्श्यनोरात् परो यो शतुरवयव तदन्तस्यक्लीबस्याङ्गस्य नित्यम् नुमागमः स्यात् शीनद्योः परतः |
| | | * उदाहरणं → पचन्ती , दीव्यन्ती । |

BSER-18/2026

| परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर |
|---|---|---|

पचन्ती → "कृत्तद्धितसमासाश्च" इति सूत्रेण पचत् शब्दस्य प्रातिपदिक सञ्ज्ञायां
"स्वौजसमौट्...सुपः", "प्रत्ययः", "परश्च" इति सूत्रेभ्यः प्रथमा द्विवचन औ प्रत्यये कृते

पचत्+औ "नपुंसकाच्च" इति सूत्रेण औ स्थाने शी आदेशेऽनुबन्धलोपे
पचत्+ई "शप्श्यनोर्नित्यम्" इति सूत्रेण नित्यम् नुमागमेऽनुबन्धलोपे
पचन्त्+ई "अज्झीनं परेण संयोज्यं" इति सूत्रेण वर्णसम्मेलने
पचन्ती "इति रूपं सिद्धं"

2

---

[10] सूत्रम् → क्त्वातोसुन्कसुनः
सूत्रार्थः → क्त्वा, तोसुन्, कसुन् प्रत्ययान्ताः शब्दाः अव्ययसञ्ज्ञकाः स्युः।
उदाहरणं → कृत्वा, उदेतोः, विसृपः, पठित्वा, गत्वा।

2

---

[11] सूत्रम् → उपान्वध्याङ्वसः
सूत्रार्थः → उप पूर्वकात्, अनु पूर्वकात्, अधिपूर्वकात्, आङ् पूर्वकाच्च वस् धातोराधारः कारकं कर्मसञ्ज्ञं स्यात्।
उदाहरणं → अनुवसति बैकुण्ठं हरिः
आवसति बैकुण्ठं हरिः
अधिवसति बैकुण्ठं हरिः
उपवसति बैकुण्ठं हरिः

2

---

[12] सूत्रम् → रुच्यर्थानां प्रीयमाणः
सूत्रार्थः → रुच्यार्थानां धातूनाम् प्रयोगे प्रियमाणार्थस्य सम्प्रदान

2

| परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर |
|---|---|---|

सञ्ज्ञा भवति ।
उदाहरणं → हरये रोचते भक्तिः ।
बालकाय मोदकं रोचते ।

[3] सूत्रम् → योपधः
सूत्रार्थः → यकारोपधोऽकारान्ताः शब्दाः पुंल्लिङ्गे प्रयुक्ताः भवन्ति ।
उदाहरणं → अयं समयः, अयं हयः ।

"खण्ड – 'स'"

[14] [i] प्रशान् → "कृत्तद्धितसमासाश्च" इति सूत्रेण प्रशाम् शब्दस्य प्रातिपदिक सञ्ज्ञायां
"स्वौजसमौट्छष्टाभ्याम्भिस्ङेभ्याम्भ्यस्ङसिभ्याम्भ्यस्ङसोसाम्ङ्योस्सुप्", "प्रत्ययः", "परश्च" इति सूत्रैः प्रथमैकवचन सु प्रत्ययेऽनुबन्धलोपे
प्रशाम् + स् इत्यवस्थायां "हल्ङ्याब्भ्योदीर्घात्सुतिस्यपृक्तं हल्" इति सूत्रेण सस्य लोपे कृते
प्रशाम् "सुप्तिङन्तं पदम्" इति सूत्रेण प्रशाम् शब्दस्य पदसञ्ज्ञायां
"मो नो धातोः" इति सूत्रेण प्रशाम् इत्यस्य मस्य स्थाने नकारादेशे
प्रशान्
"इति रूपं साधु"

| परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर |
|---|---|---|

[ii] वृत्रहा → "कृत्तद्धितसमासाश्च" इति सूत्रेण वृत्रहन् शब्दस्य प्रातिपदिकसञ्ज्ञायां
"स्वौजसमौट्छष्टाभ्याम्भिस्ङेभ्याम्भ्यस्ङसिभ्याम्भ्यस्ङसोसाम्ङ्योस्सुप्", "प्रत्ययः", "परश्च" इति सूत्रेभ्यः प्रथमैकवचन सु प्रत्यये ऽनुबन्धलोपे

वृत्रहन् + स इत्यवस्थायां "सौ च" इति सूत्रेण वृत्रहन् शब्दस्य उपधायाः अकारस्य दीर्घे आकारादेशे

वृत्रहान् + स "हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात्सुतिस्यपृक्तं हल्" इति सूत्रेण सस्य लोपे कृते

वृत्रहान् "नलोपः प्रातिपदिकान्तस्य" इति सूत्रेण नकारस्य लोपे कृते

वृत्रहा "इति रूपं सम्पन्नम्"

1½ 3

---

[15] [ii] आशीः → "कृत्तद्धितसमासाश्च" इति सूत्रेण आशिष् शब्दस्य प्रातिपदिकसञ्ज्ञायां
"स्वौजसमौट्छष्टाभ्याम्भिस्ङेभ्याम्भ्यस्ङसिभ्याम्भ्यस्ङसोसाम्ङ्योस्सुप्", "प्रत्ययः", "परश्च" इति सूत्रेभ्यः प्रथमैकवचन सु प्रत्यये ऽनुबन्धलोपे

आशिष् + स इत्यवस्थायां "हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात्सुतिस्यपृक्तं हल्" इति सूत्रेण सकारस्य लोपे कृते

आशिष् "सुप्तिङन्तं पदम्" इति सूत्रेण आशिष् शब्दस्य पदसञ्ज्ञायां
"ससजुषोः रुः" इति सूत्रेण सस्य रुत्वे ऽनुबन्धलोपे

आशिर् इत्यवस्थायां "र्वोरुपधाया दीर्घ इकः" इति सूत्रेण रेफान्तस्य उपधायाः इकारस्य दीर्घे ईकारादेशे

आशीर् "विरामोऽवसानम्" इति सूत्रेण 'रु' इत्यस्य अवसान

1½

| परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर |
|---|---|---|

सञ्ज्ञायां
"खरवसानयोर्विसर्जनीयः" इति सूत्रेण रकारस्य स्थाने विसर्गे

आशीः " इति रूपं सिद्धं"

1

[iv] अनया → "कृत्तद्धितसमासाश्च", "अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं" इति सूत्राभ्यां इदम् शब्दस्य प्रातिपदिकसञ्ज्ञायां "स्वौजसमौट्---सुप्", "प्रत्ययः", "परश्च" इति सूत्रेभ्यो तृतीया एकवचन टा प्रत्ययेऽनुबन्धलोपे

1½

इदम् + आ इत्यवस्थायां "त्यदादीनामः" इति सूत्रेण इदम् इत्यस्य अन्त्यस्य मकारस्य अत्वे

इद + अ + आ "अतो गुणे" इति सूत्रेण पररूपमेकादेशे

इद + आ स्त्रीत्वविवक्षायां "अजाद्यतष्टाप्" इति सूत्रेण टाप्प्रत्यये अनुबन्धलोपे

इद + आ + आ "अकः सवर्णे दीर्घः" इति सूत्रेण सवर्णदीर्घे कृते

3

इदा + आ इत्यवस्थायां "अनाप्यकः" इति सूत्रेण 'इदा' इत्यस्य इद् भागस्य स्थाने अनादेशे

अना + आ "आङि चापः" इति सूत्रेण अना इत्यस्य आकारस्य स्थाने एकारादेशे

अने + आ "एचोऽयवायावः" इति सूत्रेण एकारस्य स्थाने अयादेशे

अन् + अय् + आ "अज्झीनं परेण संयोज्यं" इति सूत्रेण वर्णसम्मेलने

अनया

" इति रूपं सिद्धं"

| परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर |
|---|---|---|

[16] [ii] कानि → "कृत्तद्धितसमासाश्च", "अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं" इति सूत्राभ्यां किम्-किम्-किम् शब्दानां प्रातिपदिकसञ्ज्ञायां
"सरूपाणामेकशेष एकविभक्तौ" इति सूत्रेण सम किम् शब्दानां एक किम् शब्दं शेष्यते
इत्यवस्थायां "स्वौजसमौट्---सुप्", "प्रत्ययः", "परश्च" इति सूत्रेभ्यो प्रथमा बहुवचन जस्प्रत्यये ऽनुबन्धलोपे

1½

किम्+अस् "जश्शसोः शि" इति सूत्रेण जस् स्थाने शि आदेशेऽनुबन्धलोपे
किम्+इ इत्यवस्थायां "किमः कः" इति सूत्रेण किम् शब्दस्य स्थाने कादेशे
क+इ "सुडनपुंसकस्य" इति सूत्रेण सर्वनामस्थानसञ्ज्ञायां
"नपुंसकस्य झलचः" इति सूत्रेणनुमागमनुबन्धलोपे
कन्+इ "सर्वनामस्थाने चाऽसम्बुद्धौ" इति सूत्रेण कन् इत्यस्य उपधायाअकारस्य दीर्घे आकारादेशे
कान्+इ "अज्झीनं परेणः संयोज्यं" इति सूत्रेण वर्णसम्मेलने
कानि "इति रूपं निष्पन्नम्

1½

[iv] ऊर्जी → "कृत्तद्धितसमासाश्च" इति सूत्रेण ऊर्ज् शब्दस्य प्रातिपदिकसञ्ज्ञायां
"स्वौजसमौट्---सुप्", "प्रत्ययः", "परश्च" इति सूत्रेभ्यः प्रथमा द्विवचन औ प्रत्यये
ऊर्ज्+औ इत्यवस्थायां "नपुंसकाच्च" इति सूत्रेण औ स्थाने शी आदेशे
"लशक्वतद्धिते" इति सूत्रेण शी इत्यस्य शस्य इत्सञ्ज्ञायां

(3)

BSER-181/2026

| परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर |
|---|---|---|

"तस्यलोपः" इति सूत्रेण इत्सञ्ज्ञक शकारस्य लोपे
ऊर्ज्+ई इत्यवस्थायां "अज्झीनं परेण संयोज्यं" इति सूत्रेण वर्णसम्मेलने
ऊर्जी "इति रूपं साधु"

---

[17] [i] विलाता → विलात शब्दात् "अजाद्यतष्टाप्" इति सूत्रेण टाप्प्रत्यये अनुबन्धलोपे
विलात+आ इत्यवस्थायां "अकः सवर्णे दीर्घः" इति सूत्रेण अकाराकारयोः सवर्ण दीर्घे आकारादेशे
विलाता इत्यवस्थायां "कृत्तद्धितसमासाश्च" इति सूत्रेण विलाता शब्दस्य प्रातिपदिक सञ्ज्ञायां
"स्वौजसमौट्छष्टाभ्याम्भिस्ङेभ्याम्भ्यस्ङसिभ्याम्भ्यस्ङसोसाम्ङ्योस्सुप्", "प्रत्ययः", "परश्च" इति सूत्रेभ्यः
विलाता+स् "हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात्सुतिस्यपृक्तं हल्" इति सूत्रेण सस्य लोपे कृते
विलाता "इति रूपं निष्पन्नम्"

1½

[iv] यका → यक शब्दात् "अजाद्यतष्टाप्" इति सूत्रेण टाप्प्रत्यये अनुबन्धलोपे
यक+आ इत्यवस्थायां "अकः सवर्णे दीर्घः" इति सूत्रेण अकार आकारयोः सवर्णदीर्घे आकारादेशे
यका इत्यवस्थायां "प्रत्ययस्थात् कात् पूर्वस्यात इदाप्यसुपः" इति सूत्रेण 'यका' इत्यत्र ककारात् पूर्वस्य अकारस्य इत्वं प्राप्ते
तं प्रबाध्य "न यासयोः" इति सूत्रेण ककारात्पूर्वस्य अकारस्य इत्वस्य निषेधे

1½ = 3

| परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर |
|---|---|---|

यका इत्यवस्थायां "कृत्तद्धितसमासाश्च" इति सूत्रेण।
यका शब्दस्य प्रातिपदिकसञ्ज्ञायां
"स्वौजसमौट्...सुप्", "प्रत्ययः", "परश्च" इति
सूत्रेभ्यः प्रथमैकवचन सु प्रत्यये ऽनुबन्धलोपे
यका+स् "हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात्सुतिस्यपृक्तं हल्" इति सूत्रेण
सस्य लोपे
यका "इति रूपं सिद्धं

"खण्ड-द"

[18] (i) अष्टौ - "कृत्तद्धितसमासाश्च" इति सूत्रेण अष्टन्-अष्टन्-अष्टन् शब्दानां प्रातिपदिकसञ्ज्ञायां, एकशब्दशेषे
"स्वौजसमौट्छष्टाभ्याम्भिस्ङेभ्याम्भ्यस्ङसिभ्याम्भ्यस्ङसोसाम्ङ्योस्सुप्", "प्रत्ययः", "परश्च" इति
सूत्रेभ्यो प्रथमा बहुवचन जस् प्रत्यये ऽनुबन्धलोपे
अष्टन्+अस् इत्यवस्थायां "अष्टन आ विभक्तौ" इति सूत्रेण
'अष्टन्' इत्यस्य अन्त्यस्य नस्य आत्वे
अष्ट+आ+अस् "अष्टाभ्यः औश्" इति सूत्रेण जस् स्थाने
औशादेशे ऽनुबन्धलोपे
अष्ट+आ+औ "अकः सवर्णे दीर्घः" इति सूत्रेण अकार-आकारयोः
सवर्णदीर्घे आकारादेशे
अष्टा+औ इत्यवस्थायां "वृद्धिरेचि" इति सूत्रेण आकार-
औकारयोः वृद्धिं औकारादेशे
अष्टौ " इति रूपं सिद्धं"

2

| परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर |
|---|---|---|

"क्वलिक्विद्घ्रुक्सृग्दिग्गुष्णिगुन्चुयुजिक्रुञ्चांच

[ii] युङ् → युज धातो "क्विन्च" इति सूत्रेण क्विन्प्रत्यये

युज+क्विन् "हलन्त्यम्" इति सूत्रेण क्विन् इत्यस्य नस्य इत्सञ्ज्ञा
"लशक्वतद्धिते" इति सूत्रेण ककारस्य इत्सञ्ज्ञा
"उपदेशेऽजनुनासिक इत्" इति सूत्रेण इकारस्य इत्सञ्ज्ञा
"तस्य लोपः" इति सूत्रेण नकारस्य ककारस्य इकारस्य च लोपे कृते
"अपृक्त एकाल्प्रत्ययः" इति सूत्रेण वकारस्य अपृक्तसञ्ज्ञा
"वेरपृक्तस्य" इति सूत्रेण वकारस्य लोपे कृते

युज इत्यवस्थायां "कृत्तद्धितसमासाश्च" इति सूत्रेण प्रातिपदिक सञ्ज्ञायां
"स्वौजसमौट्-- सुप्", "प्रत्ययः", "परश्च" इति सूत्रेभ्यः प्रथमैकवचन सु प्रत्ययेऽनुबन्धलोपे

युज+स "सुडनपुंसकस्य" इति सूत्रेण सर्वनामस्थानसञ्ज्ञायां
"युजेरसमासे" इति सूत्रेण नुमागमानुबन्धलोपे

युन्+ज+स "हल्ङ्याब्भ्योदीर्घात्सुतिस्यपृक्तं हल्" इति सूत्रेण सस्य लोपे

युन्+ज "संयोगान्तस्य लोपः" इति सूत्रेण जकारस्य लोपे

युन् इत्यवस्थायां "सुप्तिङन्तं पदम्" इति सूत्रेण 'युन्' इत्यस्य पदसञ्ज्ञायां
"क्विन्प्रत्ययस्य कुः" इति सूत्रेण नकारस्य कुत्वे ङकारे

युङ्
"इति रूपं सिद्धं"

2

4

BSER-181/2026

| परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर |
|---|---|---|

[19] [i] दण्डिनी → दण्डिन् शब्दात् "ऋन्नेभ्यो ङीप्" इति सूत्रेण ङीप्प्रत्यये ऽनुबन्धलोपे

दण्डिन् + ई इत्यवस्थायां "अज्झीनं परेण संयोज्यं" इति सूत्रेण वर्णसम्मेलने

इत्यवस्थायां "कृत्तद्धितसमासाश्च" इति सूत्रेण दण्डिनी शब्दस्य प्रातिपदिकसञ्ज्ञायां "स्वौजसमौट्छष्टाभ्याम्भिस्ङेभ्याम्भ्यस्ङसिभ्याम्भ्यः ङसोसाम्ङ्योस्सुप्", "प्रत्ययः", "परश्च" इति सूत्रेभ्यः प्रथमैकवचन सु प्रत्यये ऽनुबन्धलोपे

दण्डिनी + स् इत्यवस्थायां "हल्ङ्याब्भ्योदीर्घात्सुतिस्यपृक्तं हल्" इति सूत्रेण सकारस्य लोपे कृते

दण्डिनी "इति रूपं साधु"

2

[iv] अजा → अज शब्दात् "जातेरस्त्रीविषयादयोपधात्" इति सूत्रेण ङीष्प्रत्ययं प्राप्तं भवति तं प्रबाध्य "अजाद्यतष्टाप्" इति सूत्रेण टाप्-प्रत्यये ऽनुबन्धलोपे

अज + आ इत्यवस्थायां "अकः सवर्णे दीर्घः" इति सूत्रेण अकार-आकारयोः सवर्णदीर्घ आकारादेशे

अजा इत्यवस्थायां "कृत्तद्धितसमासाश्च" इति सूत्रेण अजा शब्दस्य प्रातिपदिकसञ्ज्ञायां "स्वौजसमौट्---सुप्", "प्रत्ययः", "परश्च" इति सूत्रेभ्यः प्रथमैकवचन सु प्रत्यये ऽनुबन्धलोपे

अजा + स् इत्यवस्थायां "हल्ङ्याब्भ्योदीर्घात्सुतिस्यपृक्तं हल्" इति सूत्रेण सस्य लोपे कृते

अजा "इति रूपं निष्पन्नम्"

2

4

| परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर |
| --- | --- | --- |

[20] [iii] पादेन खञ्जः → पादेन खञ्जः अत्र "येनाङ्गविकारः" इति सूत्रेण पादशब्दस्य तृतीया विभक्ति इत्यवस्थायां "कृत्तद्धितसमासाश्च" इति सूत्रेण पादशब्दस्य प्रातिपदिकसञ्ज्ञायां "स्वौजसमौट्छष्टाभ्याम्भिस्ङेभ्याम्भ्यस्ङसिभ्याम्भ्यस्ङसोसाम्ङ्योस्सुप्", "प्रत्ययः", "परश्च" इति सूत्रेभ्यः तृतीया एकवचन टा प्रत्यये अनुबन्धलोपे

पाद+आ (खञ्जः) इत्यवस्थायां "टाङसिङसामिनात्स्याः" इति सूत्रेण टास्थाने इनादेशे

पाद+इन (खञ्जः) इत्यवस्थायां "आद्गुणः" इति सूत्रेण अकार-इकारयोः गुण एकारादेशे

पादेन खञ्जः "इति रूपं निष्पन्नम्"

2

[iv] चोराद् बिभेति → चोराद् बिभेति अत्र "भीत्रार्थानां भयहेतुः" इति सूत्रेण चोर शब्दस्य अपादानसञ्ज्ञायां "अपादाने पञ्चमी" इति सूत्रेण चोर शब्दात् पञ्चमी विभक्ति इत्यवस्थायां "कृत्तद्धितसमासाश्च" इति सूत्रेण चोर शब्दस्य प्रातिपदिकसञ्ज्ञायां "स्वौजसमौट्---सुप्", "प्रत्ययः", "परश्च" इति सूत्रेभ्यः पञ्चमी एकवचन ङसि प्रत्यये अनुबन्धलोपे

चोर+अस (बिभेति) इत्यवस्थायां "टाङसिङसामिनात्स्याः" इति सूत्रेण ङसि स्थाने आतादेशे

चोर+आत् (बिभेति) इत्यवस्थायां "अकः सवर्णे दीर्घः" इति सूत्रेण अकार-आकारयोः सवर्णदीर्घ आकारादेशे

चोरात् (बिभेति) "सुप्तिङन्तं पदम्" इति सूत्रेण पदसञ्ज्ञायां

2

(4)

BSER-181/2026

| परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर |
|---|---|---|

"झलां जशोऽन्ते" इति सूत्रेण चौरात् इत्यस्य तकारस्य जश्त्वे दकारे कृते
चौराद् बिभेति "इति रूपं निष्पन्नम्"

समाप्तं

| परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर |
|---|---|---|

BSER-181/2026

| परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर |
|---|---|---|

BSER-181/2026

| परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर |
|---|---|---|

BSER-181/2026

| परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर |
|---|---|---|

BSER-181/2026

| रीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर |
|---|---|---|

BSER-181/2026

| परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर |
|---|---|---|

BSER-181/2026

| परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर |
|---|---|---|

BSER-181/2026

| परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर |
|---|---|---|
| | | |

BSER-18T/2026